सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन

राहुल गांधी

एच.एल. दुसाध

सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन

राहुल गांधी

एच.एल. दुसाध

बहुजन डाइवर्सिटी मिशन

प्रथम संस्करण : 2023

प्रकाशक : **बहुजन डाइवर्सिटी मिशन**
B-1,149/9 किशन गढ़, वसंत कुंज
नई दिल्ली-110070, सम्पर्क : 011-26125973, 9654816191
E-mail : hl.dusadh@gmail.com

© **लेखक**

मूल्य : 140.00 रुपये

रचना : सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन : राहुल गांधी
लेखक : एच. एल. दुसाध
शब्दांकन : कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
आवरण : कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-32
मुद्रक : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-110094

समर्पित

देश के लिए शहादत वरण करने वाले
पूर्व प्रधानमंत्री **राजीव गांधी** को
जिन्होंने कम्प्यूटर क्रांति करके देश को
तकनीकी रूप से इक्कसवीं सदी में पहुँचा दिया

अनुक्रम

लेखकीय	9
कांग्रेस की विजय : विपक्ष के रणनीति की हार	43
राहुल की राह में एवरेस्ट : जाति चेतना का राजनीतिकरण	48
हम एक हैं : भाजपा-कांग्रेस	52
कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार	55
कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए डाइवर्सिटी ही क्यों!	57
राहुल गांधी : हिन्दू मीडिया द्वारा तिरस्कृत एक ट्रेजडी नायक	62
राहुल गांधी : कल, आज और कल	65
भाजपा वर्ग–शत्रु तो कांग्रेस बहुजनों का वर्ग-मित्र है	70
राहुल गाँधी : हिन्दू मीडिया द्वारा तिरस्कृत एक महानायक	74
विपक्ष ने कायम किया विफलता का एवरेस्ट सरीखा दृष्टांत!	79
कांग्रेस ने फिर खुद को साबित किया : बहुजनों का वर्ग-मित्र!	82
सोशल जस्टिस का पिटारा!	86
कर्णाटक का सन्देश	94
भाजपा की हार सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है : सामाजिक न्यायवादी विजन!	100
भाजपा को शिकस्त देना सबसे आसान पॉलिटिकल टास्क	109
राहुल गाँधी का परिचय	114

लेखकीय

सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन : राहुल गांधी वैसे तो मेरी नई किताब है, पर वास्तविकता यह है कि यह 'राहुल गांधी : कल, आज और कल' के दूसरे संस्करण के मिनी संस्करण जैसा है, जिसे राहुल गांधी की सामाजिक न्यायवादी सोच को जन-जन तक पहुचाने के मकसद से तैयार किया गया है। राहुल गांधी : कल, आज और कल मैंने 2014 में डॉ. अनीता गौतम के साथ मिलकर तब तैयार किया था, जब कांग्रेस मोदी की सुनामी में आईसीयू में पहुंच गयी थी। तब आज के सामाजिक न्याय के नए आइकॉन को जहां राजनीति के बड़े-बड़े पंडित पूरी तरह ख़ारिज कर दिए थे, वहीं हिन्दू मीडिया उन पर पप्पू की छवि चस्पा दी थी। बहरहाल 2014 में इस किताब के बारे में पाठकों को जानकारी देने के लिए बताया गया था *16 मई, 2014 को जब कांग्रेस की अकल्पनीय हार का चुनाव परिणाम आया, कई राजनीतिक विश्लेषकों को यह कहने में झिझक नहीं हुई कि मोदी की सुनामी ने कांग्रेस को आईसीयू में पहुंचा दिया है। इसी तरह कुछ ने जहां इसके भविष्य में टूटने की सम्भावना जता दी, वहीं कईयों ने कांग्रेस के रूप में एक राजनीतिक युग के अंत की घोषणा कर डाला। यही नहीं, सभी टिपण्णीकारों ने एक स्वर में राहुल गांधी की क्षमता पर सवाल उठाते हुए पार्टी की हार के लिए व्यक्तिगत तौर पर उन्हें ही जिम्मेवार ठहराया। कुछ ने तो पार्टी का वजूद बचाए रखने के लिए प्रियंका को नेतृत्व सौंपने का सुझाव तक भी दे डाला।*

चुनाव परिणाम आने के एक डेढ़ महीने बाद जब विभिन्न प्रान्तों के स्थापित कांग्रेसी स्थानीय नेतृत्व के खिलाफ बगावत के जरिये राहुल गांधी को खारिज करने का परोक्ष अभियान शुरू कर दिए, उनकी देखादेखी राजनीति के पंडितों में भी उन्हें ख़ारिज करने की होड़ मच गयी। किन्तु राजनीति के पंडित यह भूल गए कि जिस राहुल गांधी को वे ख़ारिज कर रहे हैं, उसी राहुल गांधी को उन्होंने पंद्रहवीं लोकसभा चुनाव में आज के नरेंद्र मोदी की भाँति ही तरह-तरह से सराहा था। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की निश्चित हार को जीत में बदलकर वह राजनीति के पंडितों की नज़रों में एक परिपक्व व करिश्माई नेता बन गए थे। उस चुनाव के बाद लोग उनमें

पंडित नेहरु का अक्स देखने लगे थे। बहरहाल देश के तमाम राजनीतिक दलों का रंग-ढंग देखते हुए कांग्रेस के दुश्मन भी नहीं चाहेंगे कि यह पार्टी खत्म हो! इसी तरह चूँकि राहुल गांधी को ही इस पार्टी को नेतृत्व देना है, इसलिए कोई भी लोकतंत्र प्रेमी नहीं चाहेगा कि वह चिरकाल के लिए ट्रेजडी नायक बन कर रह जाएँ। ऐसे में कांग्रेस और राहुल गांधी का पुनरुद्धार कैसे हो, इस पर गहराई से विचार करना हर बुद्धिजीवी का अत्याज्य कर्तव्य बन जाता है। इस दिशा में यह पुस्तक कुछ ऐसे नुस्खे सुझाती है, जिसका अनुसरण कर न सिर्फ कांग्रेस पुनर्जीवित हो सकती है, बल्कि राहुल गाँधी पंडित नेहरु की बुलंदियों को छू सकते हैं!

बहरहाल इसे एक सुखद संयोग कहा जायेगा कि 2014 में इस किताब के जरिये मैंने कांग्रेस के पुनरुद्धार का जो सपना देखा, वह साकार होता दिख रहा है। 2023 में आज की तारीख में भारतीय राजनीति पर नजर दौड़ाते हैं तो पातें है कि जो कांग्रेस 2014 में मोदी की सुनामी में आइसीयू में चली गयी थी, राजनीति के ढेरों पंडित 2024 में उसी कांग्रेस में अप्रतिरोध्य बन चुकी भाजपा की जगह लेने की सम्भावना देख रहे हैं। और जहां तक राहुल गाँधी का सवाल है, वह सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन तथा इंडिया की आशा और आकांक्षा का प्रतीक बन चुके हैं। वह किस हद लोगों को प्रभावित कर चुके हैं, इसका अनुमान इन पंक्तियों के लिखे जाने के दौरान भीषण अशांत मणिपुर की घटना से जुड़े एक पोस्ट से लगाया जा सकता है। फेसबुक पर Rizwan Aijazi नामक एक व्यक्ति ने लिखा है, 140 करोड़ में है कोई जो मणिपुर में नोआखाली जैसी मिसाल दे सके! इस पोस्ट पर Surendra Kumar का कमेंट रहा—*राहुल गांधी के सिवाय और कोई नहीं है भारत में! मुझे तो लगता है राहुल गांधी के रूप में महात्मा गांधी ने दोबारा जन्म लिया है। वह दुनिया को सत्य, अहिंसा और निःस्वार्थ सेवा का भाव सिखा रहे हैं, बल्कि वह तो महात्मा गांधी से कुछ कदम आगे लगते हैं। क्योंकि वह बच्चों को, बूढों को, बीमारों को गले लगा के उन्हें जूते तक पहनाते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि राहुल गांधी ने अपने आपको डी-क्लास कर दिया है, जो एक जननेता के लिए बहुत आवश्यक हैं। आज़ादी से पहले के हमारे महान कांग्रेसी नेताओं में जो गुण था, आज वह राहुल गाँधी में दिख रहा है।* सच में आज की तारीख में लोग उन्हें जननेता के रूप में अपने दिलों में जगह दे चुके हैं और उन्हीं से मोदी को शिकस्त देने की उम्मीद पाल रहे हैं। बहरहाल 2014 में अभूतपूर्व पराजय के बाद जिस तरह कांग्रेस और राहुल को ख़ारिज करने का सैलाब देश में उमड़ा, उस हालात में विरले ही कुछ राजनीतिक विश्लेषक रहे, जिन्हें यकीन था कि पंद्रहवीं लोकसभा चुनाव में जिस राहुल गाँधी में लोगों को पंडित नेहरु का अक्स दिखा था, उस राहुल गांधी का भविष्य में पुनरुद्धार हो सकता है। ऐसे चंद लोगों में यह लेखक भी रहा, जिसे पूरा यकीन था कि राहुल गांधी कहीं से भी ख़ारिज करने लायक नहीं हैंः उनमें